गंगाप्रसाद शर्मा 'गुणशेखर'

ई-मेलdr.gunshekhar@gmail.com

कथानक

"अरे गुरू! अच्छे मिल गए। उस दिन आपसे जो चर्चा करी थी न। उसका ज़बर्दस्त प्लॉट हमारे दिमाग में बन रहा है।"

एकलव्य के इतना कहते ही मनोज आग बबूला हो गया। उसने कहा , "आचार्य प्रवर! चर्चा 'करी' नहीं, 'की' जाती है; और 'गुरू' नहीं 'गुरु' होता है।आप हिंदी साहित्य के जाने-माने आचार्य हैं। गाँधी दर्शन पर आपका लिखा उदाहरण बनता है; और आप कथानक जैसा बहु-प्रचलित और सामान्य-सा शब्द नहीं बोल पाते। उस आसान से शब्द की जगह अंग्रेज़ी का पूरा प्लॉट लादे फिर रहे हो! तुम्हारे तीन-तीन कहानी संग्रह और दो-दो उपन्यास छप चुके हैं। कुछ तो शर्म करो यार!"

एकलव्य ने अपनी शर्मिन्दगी छिपाते हुए बात आगे बढ़ाई, "आदरणीय डॉ. साहब! पहले अपने हेड साहब का दर्द तो सुन लो। कामता प्रसाद गुरु तो बाद में भी बन सकते हो।"

डॉ. मनोज शंखधर की उत्कंठा प्रबल हो गई , "क्या हुआ? कोई पहाड़ तो नहीं टूट पड़ा!"

"हाँ, पहाड़ ही टूट पड़ा है बेचारे पर।"

एकलव्य ने एक वाक्य में ही अपनी बात निपटा दी । इसी उत्सुकता के कारण हिंदी के अखंड प्रेमी होने के बावजूद मनोज ने विभागाध्यक्ष की जगह अंग्रेज़ी का कर्ण-कटु 'हेड' शब्द सह लिया।

चुटकी लेते हुए एकलव्य ने मनोज को बताया, "जिस लालपरी को, 'महिला युवा कथाकारों के स्त्री पात्रों की वर्जिन नैतिकता' पर शोध करा रहे थे, दुखद है कि हेड साहब की वह परी दो-तीन महीनों से अदृश्य हो गई है।"

"इससे हेड साहब पागल हो गए हैं। मैं ही नहीं, इन दिनों विभाग के सभी लोग इस बात को नोटिस कर रहे हैं ।"

एकलव्य ने मंद-मंद मुस्काते हुए बात आगे बढ़ाई कि, "कुलपति महोदय को छोड़कर दूसरा जो भी उनके संपर्क में आता है या झूठे ही फ़ोन कर देता है, उसी से कामिनी का हाल-चाल पूछने लग जाते हैं।

जब कल कल्पना से भावुक होकर कामिनी का हाल पूछ रहे थे, तभी एकलव्य वहाँ पहुँच गया। उसे हेड साहब ने बाहर ही रुकने का इशारा किया। उसने पर्दे की ओट से सुना कि हेड साहब कुछ फुसफुसा रहे हैं, "कामिनी का फ़ोन तो नहीं आया था? ज़रा पता लगाओ कि कामिनी को कहीं कोरोना तो नहीं हो गया है।"

एकलव्य हेड साहब को कभी फूटी आँखों नहीं सुहाया। लेकिन कल्पना के बाहर निकलते ही एकलव्य को भीतर बुला लिया । उससे भी छूटते ही उन्होंने अपना यह दु:ख साझा कर लिया और एकलव्य को यह ज़िम्मेदारी सौंप दी कि वह जल्द से जल्द कामिनी का पता लगाए और उसका हालचाल उन्हें बताए। लगे हाथ इसके बदले में उसे अपने निर्देशन में ले लेने का आश्वासन भी दे दिया। इसी खुशखबरी को साझा करने के लिए एकलव्य लॉक डाउन के लॉक को तोड़कर डॉ. मनोज शंखधर को खोजने निकल पड़ा था। संयोग से सब्जी मण्डी में वह उसे मिल भी गया था।

आज मनोज शंखधर भी शहतूत की मानिंद शब्द-शब्द को मुँह में पिघलाकर अपने गुरु की करतूत का आनंद ले रहे थे, "भाई! कोरोना का सबसे ज़्यादा असर हिंदी के शोध निर्देशकों पर ही देखा जा रहा है। उनके जीवन के उपन्यासों के कथानक में नायक तो हैं पर नायिकाओं का पहले अध्याय में ही अपहरण हो गया है। इससे वे और भी गंभीर रूप से प्रभावित हैं, जिनकी नायिकाओं बनाम शोध छात्राओं ने घर वालों के दबाव में फ़ोन उठाना बंद कर दिया है।"

इसपर दोनों ने युगलबंदी में ठहाका लगाया।